International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 54-56

प्रभा खेतान कृत 'आओ पेपे घर चलें' लंबी कहानी में चित्रित स्त्री पात्रों का अवलोकन

रम्या. वी.

पी एच. डी. शोधार्थी, हिंदी अध्ययन एवं शोध केन्द्र, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय

प्रस्तावना

प्रभा खेतान का 'आओ पेपे घर चलें' पहले 'हंस' पत्रिका में लंबी कहानी के रूप में प्रकाशित हुई और बाद में उपन्यास के रूप में प्रकाशित हुआ। 'आओ पेपे घर चलें' के माध्यम से प्रभा खेतान ने स्त्री की कई पीड़ाओं को हमारे सामने लाने का प्रयास किया है। स्त्री की स्थिति हर कहीं लगभग समान नज़र आती है। अर्थात वैश्विक स्तर पर स्त्रियां लगभग समान समस्याएँ झेल रही हैं। चाहे अमेरिका की स्त्री हो या मारवाड़ी समाज की स्त्री हो सब टूटकर जीने के लिए अभिशप्त बन जाती हैं। डॉ. अनामिका लिखती हैं "प्रभा खेतान का आओ पेपे घर चलें इसी कड़ी की एक उपन्यासिका है जिसमें जीवन के फार्मेटिव वर्षों के निर्णायक अमरीका-प्रवास के कुछ मार्मिक प्रसंग और नारी चरित्र इस स्थापना के आलोक में आलने पर सजा डाले गये हैं कि विश्व का कोई कोना हो, औरत कितनी भी बदल गयी हो, पुरुष उसे अपना उपग्रह ही समझता है और समझता रहेगा जब तक वह आर्थिक स्वावलंबन के साथ अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व-विकास न कर ले!"[1] 'आओ पेपे घर चलें' लंबी कहानी में पीड़ाओं को सहकर जीने के लिए मजबूर बन गयी कई स्त्री पात्रों को हम देख सकते हैं।

तलाक, विवाहेतर संबंध, प्रेम आदि के कारण पिसती स्त्रियों को हम इस लंबी कहानी में देख सकते हैं। मरील, प्रभा, आइलिन, मिसेज डी, क्लारा ब्राउन, हेल्गा, कैथी आदि स्त्री पात्रों इसके लिए उदाहरण हैं। 'आओ पेपे घर चलें' में चित्रित स्त्री पात्रों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

मरील

मरील चालीस वर्ष की तलाकशुदा स्त्री है। उसके पति बीस वर्ष की लडकी के साथ भाग गया। कोर्ट में जाने के पश्चात मरील के पति हजार डालर महीने में भेज देने के लिए मजबूर हुआ। प्रभा मरील के पति के बारे में पूछते समय मरील कहती है भाग गया साला, किसी बीस बरस की लड़की को लेकर। कोर्ट का दरवाजा खटखटाने पर आजकल हजार डालर महीने का भेजता है, बास्टर्ड।"[2] मरील के घर में प्रभा को तनाव भरा वातावरण जैसा महसूस हुआ, क्योंकि मरील और उसकी दो बेटियों के बीच लड़ाई होती रहती है और मरील अपने बच्चों को प्यार देने में पीछे रह जाती है। डॉ. उषा कीर्ति राणावत लिखती हैं "इसी उपन्यास की लारा खुले आम हिप्पी लड़कों के साथ घूमती है। माँ के डाँटने पर वह माँ के प्रेमियों की संख्या गिना देती है। मरील की दूसरी बेटी नैन्सी भी अपनी माँ से नफरत करती है। बदचलन माँ के कारण उनके डैड ने घर छोड़ दिया। यह एक ऐसा परिवार है, जहाँ किसी को किसी से लगाव नहीं है।"[3] मरील और पति के संबंधों में दरार आने के कारण उसकी दो बेटियों को तनाव झेलनी पड़ती हैं और वे एक दूसरे से नफरत करना शुरू करती हैं। पति-पत्नी के बीच दरार आने से बच्चों की जिंदगी में पीड़ाएँ आने की संभावना अधिक है। अत: तनाव न आने के लिए पति पत्नी को ही ध्यान रखना पडेगा, नहीं तो विवाह संस्थे में कदम रखना ही नहीं चाहिए।

अभिभावक हमेशा अपने बच्चे उनके कहे अनुसार जिंदगी निभाने की चाहत रखता है। मगर वैसा कभी होता नहीं। माँ-बाप के बीच के झगडा और उनके बिछुडन बच्चों की जिंदगी में बुरी असर पड़ने का कारण बन जाता है। पिसती हुई मरील की बेटी लारा के बारे में लेखिका मरील से कहती हैं "तुम मियाँ-बीवी के अहम की टकराहट में बेचारी लारा पिस जाएगी।"[4] तब मरील प्रभा से कहती है "ऐसी औलाद को पाकर हर माँ पत्थर हो जाती है प्रभा, समझी तुम?"[5] तब लेखिका को लगता है क वे भी खुद अपनी माँ के कहे अनुसार नहीं चलती है। प्रभा खेतान विवाह संस्था को ओवर डेटेड संस्था मानती है और इस कारण से उनकी माँ भी दु:खी रहती हैं।

मरील को मिसेज डी, ग्रेटा गारबो, होलीवुड की फिल्म स्टार्स, क्लारा ब्राउन आदि की वार्डरोब मानेज करने का काम है।

प्रभा

लेखिका की स्वानुभूतियों का जिक्र भी 'आओ पेपे घर चलें' में हम देख सकते हैं। मारवाडी समाज में लड़कियों के जन्म से खुशी नहीं होती है। पाँचवीं लडकी होने के कारण प्रभा खेतान के जन्म के बाद उनके परिवार में खुशी भरा माहौल नही था। अविवाहित स्त्री को समाज तथा परिवार उचित सम्मान नहीं देता है। प्रभा खेतान भी विवाहित डाक्टर सर्राफ से प्यार करने के कारण अविवाहित रहने का फैसला लिया। ब्यूटी थेरापी के कोर्स के लिए प्रभा खेतान अमेरिका चली जाती हैं। प्रभा खेतान को भी अपनी राह में दुख भी सामना करना पड़ा। प्रभा खेतान के साढे नौ साल के उम्र में उनके पिताजी की मृत्यु होती है।

प्रभा खेतान को मालूम है कि औरत की स्वतंत्रता उसके पर्स पर निर्भर है। इस कारण से वे पैसा कमाना चाहती हैं और फिलोसफी में एम ए करके ब्यूटी थेरापी में डिप्लोमा करने के लिए विदेश जाती हैं।

हेल्गा अपने खून के रिश्तेदारों को खोने की पीड़ा बताने के कारण प्रभा हेल्गा से अपने पिताजी की हत्या की बात बताती हैं। जालिमों द्वारा प्रभा खेतान के साढ़े नौ साल के उम्र में उनके पिताजी मारे गये। माँ को यथास्थिति को बनाये रखने के लिए संघर्षमय जीवन बितानी पड़ती हैं। प्रभा हेल्गा से यह भी कहती हैं कि मारवाड़ी समाज में बेटी दान की वस्तु है। इस कारण से उनकी माँ प्रभा द्वारा कमाये गये पैसे नहीं लेंगी।

प्रभा सोचती हैं कि उसके बहनें और भाभियाँ बाल सफेद होते समय या शरीर मोटी होते समय उसे ठीक करवाने के लिए कहीं नहीं जाती हैं और जो हो रहा है उसे वैसा का वैसा स्वीकार करती हैं। प्रभा खेतान को लगता है कि वह ब्यूटी पार्लर खोला तो भी वहाँ आम स्त्रियाँ नहीं आयेंगी, मगर वहाँ विशिष्ट वर्ग की स्त्रियाँ ही आयेंगी।

प्रभा के जन्म के बाद उसकी माँ बीमार हो जाती हैं। दायी माँ द्वारा प्रभा खेतान को पाल पोसकर बड़ा करती हैं।

आइलिन

आइलिन बूढ़ी होकर भी रोजर नामक विवाहित पुरुष से प्यार करती है। आइलिन कभी प्यार को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होती है। वह प्रभा से कहती है **"**मैं अपने पहले पति का चेहरा हर पुरुष में खोजती रहती हूँ। किसी में उसका आवाज पाती हूँ, कहीं उसकी दृष्टि, कहीं उसका स्पर्श। कोई बिलकुल उस जैसा लगता है।**"**[6] मिसेज डी पति के विवाहेतर प्रेम के कारण दुखी बन जाती है। आइलिन मिसेज डी के प्रति संवेदनशील है। वह प्रभा से कहती है **"**प्रभा, मिसेज डी को कोई समझा सकता , मुखौटा लगाकर नहीं हंसा जाता। सारी जिंदगी उसके सामने पड़ी है। वह मेरी बेटी है, अपनी बेटी को यूं तबाह होते कैसे देखूं **?"**[7] आइलिन को अपनी जिंदगी के सारे दुखों को भूलने के लिए पेपे नामक उसके कुत्ते के प्यार सहायक बन जाता है। आइलिन की मृत्यु के बाद पेपे में भी दुख का भाव झलकता है।

मिसेज डी

मिसेज डी का दूसरा नाम एलिजा है। मिसेज डी को प्रेम के त्रिकोण के कारण पिसना पड़ता है और वे डाक्टर डी से तलाक नहीं चाहती है। मिसेज डी प्रभा से कहती है **"**मैं हक की लड़ाई नहीं लड़ना चाहती, मैं जार्ज का प्यार चाहती हूँ। वह क्या है क्लारा में जो मुझमें नहीं**...?"**[8] डॉक्टर डी को छोड़ने के लिए मिसेज डी तैयार नहीं होती है। मिसेज डी के हर दुख में आइलिन ने एक सान्त्वन भरी भूमिका दी। इस कारण से आइलिन की मृत्यु के बाद मिसेज डी एक तरह का खालीपन महसूस करती है। प्रभा एलिजा से उसके पुरुष मित्रों के बारे में पूछते समय वह कहती है कि उसके दुख में आते हुए पुरुष मित्रों हमदर्द सुनकर फिर उसके शरीर की चाहत में आ जाते हैं।

एलिजा पति के विवाहेतर संबंध के कारण आत्महत्या करने के लिए गोलियाँ खा जाती है, लेकिन वह बच जाती है। इस कारण से डॉक्टर डी मेंटल डिरेंजमेंट का आरोप लगाकर कोर्ट से अलग होने की अनुमति लेता है। मिसेज डी तलाक पत्र पर साइन करने के लिए मजबूर बन जाती है।

क्लारा ब्राउन

क्लारा ब्राउन तलाकशुदा स्त्री है। क्लारा ब्राऊन को हिस्टीरिया के दौरे पड़ते समय वह उसके दोस्त डॉक्टर डी से या मरील से मिलती है। क्लारा ब्राऊन और डॉक्टर डी का प्यार हो जाता है। डॉक्टर डी मिसेज डी और क्लारा ब्राउन दोनों को चाहता है। क्लारा ब्राउन को डॉक्टर डी के अलावा नये प्रेमी भी है।

हेल्गा

हेल्गा के पीड़ा भरे अतीत के कारण वह अपने बच्चों को भी प्यार नहीं कर पाती है। उसका मानना है कि उसके पति को उससे प्यार नहीं, मगर दया है। हेल्गा को रेस्टोरेंट भी है। उसे अतीत की यादें सताने के कारण बच्चे और पति को छोड़कर तथा खुद के कमाये पैसे लेकर वह किम्बूत में जाने की फैसला लेती है।

हेल्गा प्रभा को मजबूत स्त्री बनने के लिए कहती है। वह प्रभा से कविता लिखने के लिए कहती है, लिकिन रोने से मना करती है। हेल्गा प्रभा खेतान को याद दिलाती है कि बिना आत्मनिर्भर बने वह कुछ भी लडाई लड़ नहीं पाएगी।

कैथी

कैथी के पति ब्रैडली मूर साइकियाट्रिस्ट है। कैथी मातृत्व नहीं चाहती है। ब्रैडली कैथी को कमाने बाहर जाने नहीं देता है। इस कारण से वह ब्रैडली के पैसे ज्यादा खर्च करती है।

सिर्फ भारतीय स्त्रियाँ ही नहीं स्त्रियाँ हर कहीं तड़प रही हैं। कैथी अपनी बहन एलिजा की स्थिति सोचकर दुखी बन जाती है। कैथी के पिताजी के बुरे चरित्र के कारण उसकी माँ आत्महत्या कर लेती हैं।

कैथी की आण्टी एडिना विवाहित पुरुष से प्यार करती हैं और प्रेमी द्वारा दिये गये इंगेजमेंट रिंग पहन लेती हैं, लेकिन आण्टी की शादी नहीं होती हैं। कैथी के नाना के बोस्टण समाज में वैसे संबंध को सम्मान नहीं देता है। इस कारण से एडिना कैथी की नानी द्वारा दिये गये सारे गहने लौटा देती हैं। कैथी एडिना आंटी से बहुत अधिक मिलती है। एडिना आंटी बोस्टण के स्कूल में प्रिंसिपल हैं। कैथी प्रभा से कहती है **"**ब्रैडी मुझे कमाने नहीं भेजते। आण्टी आर्थिक स्वतंत्रता को पहली शर्त मानती है।**"**[9] अधिकांश पुरुष स्त्री द्वारा कमाकर लाना अपने आत्मसम्मान की चोट जैसा मानता है, मगर स्त्री की भी अपना आत्मसम्मान होती है। इसके लिए स्त्री का आर्थिक रूप में आत्मनिर्भर होना बहुत जरूरी है।

कैथी को माँ द्वारा दिये गये सलाह जिंदगी को सामना करने में सहायक बन जाती है। कैथी की माँ ने उसे मजबूत बनकर जीने की सलाह दी।

कैथी भी पति जैसा व्यस्त होकर काम करने के लिए चाहती है, मगर समस्या यह है कि उसके पति ब्रैडली काम करने के लिए बाहर जाने की अनुमति नहीं देता है। इसके बारे में शादी के पहले वह सोच नहीं पायी, क्योंकि कैथी ब्रैडी के प्यार में पागल होकर सारे शर्तों को मानकर चली। कैथी मातृत्व की बेड़ियों को जानती है। इसलिए वह बच्चा नहीं चाहती है। वह प्रभा से कहती है **"**क्या बकवास कर रही हो**?** बच्चा मेरी जिंदगी को सार्थक बना देगा**?** वह तो केवल मेरी जिंदगी के और बीस वर्ष खा जाएगा और उसके बाद कोई नहीं रहेगा। वह घर छोड़कर पता नहीं कहां**,** किस जगह**..."**[10] मातृत्व स्त्री के पैर को बांध देता है।

कैथी को प्रेम पर भरोसा नहीं। उसे लगता है कि उसके पति पहली पत्नी को छोड़ा वैसा ही उसको भी छोड़ देगा। कैथी के अनुसार प्यार एक आदत है और सब उस आदत के गुलाम होते हैं।

'आओ पेपे घर चलें' लंबी कहानी के कई प्रसंगों में स्त्रीवादी स्वर सामने आता है। 'आओ पेपे घर चलें' लंबी कहानी में संघर्षमय जीवन बिताती हुई स्त्रियाँ, प्रेम करती हुई स्त्रियाँ, विवाह संस्था से पिसती हुई स्त्रियाँ, संवेदनशील स्त्रियाँ, आत्मनिर्भर बनने की चाहत रखती हुई स्त्रियाँ आदि कई तरह की स्त्री पात्रों आती हैं।

संदर्भ

1. हंस, अक्तूबर 1990, पृ.90
2. आओ पेपे घर चलें-प्रभा खेतान, पृ. 24
3. प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार- डॉ. उषा कीर्ति राणावत, पृ.117-118

4. आओ पेपे घर चलें-प्रभा खेतान, पृ.65
5. आओ पेपे घर चलें-प्रभा खेतान, पृ.65
6. आओ पेपे घर चलें-प्रभा खेतान, पृ. 68
7. आओ पेपे घर चलें-प्रभा खेतान, पृ. 62
8. हंस, मई 1989, पृ.65
9. आओ पेपे घर चलें-प्रभा खेतान, पृ.118
10. आओ पेपे घर चलें-प्रभा खेतान, पृ.133
11. आओ पेपे घर चलें –प्रभा खेतान, सरस्वती विहार, दिल्ली, प्रथम संस्करण :1990
12. प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, डॉ.उषाकीर्ति राणावत, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 2005
13. हंस, मई 1989, संपादक –राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन
14. हंस, अक्तूबर 1990, संपादक –राजेन्द्र यादव, अक्षर प्रकाशन